Date – 18/09/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – I (Hons.)

Topic – Criticism of Leibnitz monads theory.

Scanned with CamScanner

## आलोचना

(i) लाइबनित्ज मोनड को स्वतंत्र शक्तिसम्पन्न मानते हैं परन्तु ऐसा मानने पर मोनडों में पूर्व स्थापित सामञ्जस्य की बात करना असंगत है।

(ii) लाइबनित्ज मोनड को अनादि, अनन्त एवं नित्य मानते हैं। साथ ही ईश्वर को उनका स्रष्टा मानते हैं। ये दोनों बातें एक साथ सत्य नहीं हो सकती।

(iii) यदि मोनड गवाक्षहीन (Windowless) हैं और एक-दूसरे से स्वतंत्र हैं तो फिर वे सम्पूर्ण विश्व को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकते।

Scanned with CamScanner

(iv) मोनडवाद एक धारणा या अभिग्रह की तरह है जिसे सिद्ध या असिद्ध नहीं किया जा सकता।

(v) मोनडवाद तर्कत: अहंमात्रवाद में परिणत हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति केवल उसी बात को ठीक से जान सकता है जो उनके गवाक्षहीन संसार के अंदर है।

(vi) यदि सभी मोनड पूर्व स्थापित सामञ्जस्य के नियम से बंधे हुए हैं तो वैसी स्थिति में संकल्प - स्वतंत्रता के अभाव में पाप और पुण्य की अवधारणा निरर्थक हो जाती है।

(vii) यदि प्रत्येक सत्ता का पर्याप्त हेतु है तो फिर ईश्वर का भी पर्याप्त हेतु होना चाहिए। "ईश्वर अपना ही पर्याप्त हेतु है" इस तर्क से पर्याप्त कारणता का नियम खंडित हो जाता है।

Scanned with CamScanner